हर एक चित्र पर बैठ समझाना चाहिए तो सब सीख जावेंगे।मुख्य है ही वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी।भाषा कोई भी हो।अपनी2 भाषा में वर्ल्ड की हिस्टी और जॉग्राफी सकते हो।कहते हैं लांग2 अ गो।यहां तुम कहेंगे 5000वर्ष पहले देवताओं का राज्य था।ल.ना. महाराजा–महारानी थे।यह एक कहानी है।भारतवासी देवी देवताओं ने राज्य कैसे लिया और कैसे गंवाया?कोई लड़ाई आदि की बात नहीं है।माया ते हारे हार फिर माया ते जीते जीत।माया कहा जाता है रावण को।बरोबर इन्होंने राज्य किया था।भारत में 21पीढ़ी मशहूर है।अकाले मृत्यु कब वहां नहीं होती है।इसलिए 21पीढ़ी कहा जाता है।बाप जीत पहनाते हैं गुप्त रीति।फिर आधा कल्प बाद 5विकारों रूपी रावण से हराया अर्थात् 5विकारों में फंस गये।आधा कल्प फंसते सीढ़ी उतरते आये।फिर बाप है स्वर्ग का रचयिता।उनको कहा जाता है हैविनली गॉड फादर।तो मनुष्यों को पवित्र बनाते होंगे ;क्योंकि वहां होते ही हैं निरविकारी।विकारी बनने से हार,निर्विकारी बनने से जीत।कितना सहज समझाया जाता है।बाप के बच्चे बने हो तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े।यह है ईश्वरीय मिशनरी।दैवी धर्म स्थापना की मिशनरी।बाप बैठ बच्चों द्वारा स्थापना करते हैं, कराते हैं।करन करावनहार कहा जाता है।मूल बात है देही अभिमानी बनने की ;क्योंकि आधा कल्प रावण राज्य में देही अभिमानी रहे हैं।सतयुग में भल देही अभिमानी रहते ;परंतु बाप का पता नहीं रहता है।अभी तुम बाप को जानते हो।तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए।डाडे का वर्सा भी बहुत सहज है।भारत में बिल्कुल मशहूर है।तुम सब का हक लगता है।तुम सब आत्मायें हो।इसलिए सब ब्रदर्स हो।सबको हक है बाप से वर्सा लेने का।सतयुग में सभी आत्मायें सुखी बन जाती हैं।बाकी सब शांति में रहती हैं।बाप आकर और शांति की स्थापना करते हैं।कोई भी देहधारी सुख–शांति नहीं स्थापन करते हैं।यह अलौकिक कर्तव्य एक बाप के बिना और कोई कर नहीं सकते।सद्गति दाता वा जीवनमुक्तिदाता देहधारी हो नहीं सकता।उनको विदेही विचित्र कहा जाता है।अवतरण गाया भी हुआ है।शिवरात्री कहते हैं।निराकार की रात्री कैसे होती है कोई भी नहीं जानते।छोटी2 बच्ची तुम हाइएस्ट पोजीशन वालों को बैठ समझाती हो।बच्चों को वस्ट ऑफ टाइम नहीं करना चाहिए।कुछ ना कुछ टाइम निकाल सर्विस में लगाना चाहिए।पवित्र तो रहना ही है।मुश्किल क्या बात है?कोई पानी पर पैदल जाते हैं।तो पुरुषार्थ करने से हो सकता है ना ;परंतु फायदा कुछ भी नहीं।यहां पर बहुत फायदा है।बाप समझा देते हैं इस याद में माया बहुत विघ्न डालेगी।ज्ञान तो बहुत सहज है।हमने ऐसे 84जन्म लिये हैं।यह भी एक जैसे कि कहानी है।कुछ तकलीफ नहीं है।बाप जानते हैं भक्तिमार्ग में इन्होंने बाप से मिलने लिए बहुत धक्के खाये हैं।कहते भी हैं भगवान कोई ना कोई रूप में कब ना कब मिल जावेंगे।बातें बहुत सुनाते हैं।तुम किसी को कहो भक्ति से दुर्गति होती है तो गुस्से हो जावेंगे।अरे कहते हो–भक्तों को भगवान आकर सद्गति देते हैं।तो भक्ति से दुर्गति हुई ना।बाप युक्तियां बहुत समझाते हैं।ओमशांति।

2.1.67 रात्री क्लास

चित्र बनाने वालों के लिए बाबा डायरैक्शन देते रहते हैं।चित्र ऐसे युक्ति से रेगज़िन पर वा कपड़े पर बनाओ जो खराब ना हो।कोई को कान्टेक्ट दे दो।तो झट चित्र बन जावेंगे।बाबा को तो चित्र बहुत चाहिए।सर्विसेबुल बच्चे बहुत चाहिए।बच्चे मिडगेट्स बन गये हैं।सर्विस में खड़े नहीं होते।बंधन कहते2 टाइम वेस्ट ना करना चाहिए।बंधन को उड़ा देना पड़ता है।अपना और बहुतों का जीवन बनाना है।आसुरों की जंज़ीरों में अपने को फंसाना नहीं है।अगर वो जीवन नहीं बनाते हैं तो हम क्यों उनके पीछे अपने जीवन को गंवायें।गाली तो खानी ही पड़ेगी।इसमें सख्त दिल बनना होता है।वारियर्स सख्तदिल होते हैं।इसमें बहादुरी दिल चाहिए।हंस–बगुले इकट्ठे बहुत मुश्किल रही सकते हैं।अपना जीवन तो बनाना है ना।अभी अजुन सर्विस ही कहां हुई है।लाखों सेन्टर्स बनने चाहिए।(बनने) भी जरूर हैं।नहीं तो इतनी राजधानी कैसे स्थापन होगी?जितना हो सके सबको रास्ता बताने का पुरुषार्थ करते रहो।अंधों की लाठी बनो।ओम